وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿۱۷﴾ ثُمَّ مَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿۱۸﴾

और तू क्या जाने कैसा इन्साफ़ का दिन फिर तू क्या जाने कैसा इन्साफ़ का दिन

يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْـًٔا ؕ وَالْاَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ﴿۱۹﴾ ع

जिस दिन कोई जान किसी जान का कुछ इख़्तियार न रखेगी[19] और सारा हुक्म उस दिन अल्लाह का है

ایاتها ۳۶ ﴿۸۳﴾ سُوْرَةُ الْمُطَفِّفِيْنَ مَكِّيَّةٌ ﴿۸۶﴾ رکوعها ۱

सूरए मुत़फ़्फ़िफ़ीन मक्किय्या है, इस में छत्तीस आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ ﴿۱﴾ الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُوْنَ ﴿۲﴾

कम तोलने वालों की ख़राबी है वोह कि जब औरों से माप (नाप कर) लें पूरा लें

وَاِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ ﴿۳﴾ اَلَا يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمْ

और जब उन्हें माप या तोल कर दें कम कर दें क्या उन लोगों को गुमान नहीं कि उन्हें

مَّبْعُوْثُوْنَ ﴿۴﴾ لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۵﴾ يَّوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۶﴾

उठना है एक अ़ज़मत वाले दिन के लिये[2] जिस दिन सब लोग[3] रब्बुल आ़लमीन के हु़ज़ूर खड़े होंगे

كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْفُجَّارِ لَفِيْ سِجِّيْنٍ ﴿۷﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا سِجِّيْنٌ ﴿۸﴾

बेशक काफ़िरों की लिखत[4] सब से नीची जगह सिज्जीन में है[5] और तू क्या जाने सिज्जीन कैसी है[6]

كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ﴿۹﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۱۰﴾ الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ

वोह लिखत एक मोह्‌र किया नविश्ता (तह़रीर नामा) है[7] उस दिन[8] झुटलाने वालों की ख़राबी है जो इन्साफ़ के

19 : या'नी कोई काफ़िर किसी काफ़िर को नफ़्अ़ न पहुंचा सकेगा। (خازن) **1 :** "सूरए मुत़फ़्फ़िफ़ीन" एक क़ौल में मक्किय्या है और एक में मदनिय्या और एक क़ौल येह है कि ज़मानए हिजरत में मक्कए मुकर्रमा व मदीनए त़य्यिबा के दरमियान नाज़िल हुई, इस सूरत में एक रुकूअ़, छत्तीस आयतें, एक सो उन्हत्तर कलिमे और सात सो तीस ह़र्फ़ हैं। **शाने नुज़ूल :** रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم जब मदीनए त़य्यिबा तशरीफ़ फ़रमा हुए तो यहां के लोग पैमाने में ख़ियानत करते थे, बिल ख़ुसूस एक शख़्स अबू जुहैना ऐसा था कि वोह दो पैमाने रखता था लेने का और, देने का और। उन लोगों के ह़क़ में येह आयतें नाज़िल हुईं और उन्हें पैमाने में अ़द्ल करने का हुक्म दिया गया। **2 :** या'नी रोज़े क़ियामत, उस रोज़ ज़र्रे ज़र्रे का ह़िसाब किया जाएगा। **3 :** अपनी क़ब्रों से उठ कर **4 :** या'नी उन के आ'माल नामे। **5 :** सिज्जीन सातवीं ज़मीन के अस्फ़ल में एक मक़ाम है जो इब्लीस और उस के लश्करों का मह़ल है। **6 :** या'नी वोह निहायत ही होल व हैबत का मक़ाम है। **7 :** जो न मिट सकता है न बदल सकता है। **8 :** जब कि वोह नविश्ता (लिखा हुवा) निकाला जाएगा।

www.dawateislami.net

بِيَوْمِ الدِّيْنِ ﴿١١﴾ وَمَا يُكَذِّبُ بِهٖۤ اِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ﴿١٢﴾ اِذَا تُتْلٰى

दिन को झुटलाते हैं[9] और इसे न झुटलाएगा मगर हर सरकश गुनहगार[10] जब उस पर हमारी आयतें

عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٣﴾ كَلَّا بَلْ ۜ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ

पढ़ी जाएं कहे[11] अगलों की कहानियां हैं कोई नहीं[12] बल्कि उन के दिलों पर ज़ंग चढ़ा दिया है

مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٤﴾ كَلَّاۤ اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ ﴿١٥﴾

उन की कमाइयों ने[13] हां हां बेशक वोह उस दिन[14] अपने रब के दीदार से महरूम हैं[15]

ثُمَّ اِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيْمِ ﴿١٦﴾ ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ

फिर बेशक उन्हें जहन्नम में दाख़िल होना फिर कहा जाएगा येह है वोह[16] जिसे तुम

تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٧﴾ كَلَّاۤ اِنَّ كِتٰبَ الْاَبْرَارِ لَفِيْ عِلِّيِّيْنَ ﴿١٨﴾ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ

झुटलाते थे[17] हां हां बेशक नेकों की लिखत[18] सब से ऊंचे महल इल्लिय्यीन में है[19] और तू क्या जाने

مَا عِلِّيُّوْنَ ﴿١٩﴾ كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ﴿٢٠﴾ يَّشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢١﴾ اِنَّ الْاَبْرَارَ

इल्लिय्यीन कैसी है[20] वोह लिखत एक मोहर किया नविश्ता (तहरीर नामा) है[21] कि मुक़र्रब[22] जिस की ज़ियारत करते हैं बेशक नेकोकार

لَفِيْ نَعِيْمٍ ﴿٢٢﴾ عَلَى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ﴿٢٣﴾ تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِهِمْ نَضْرَةَ

ज़रूर चैन में हैं तख़्तों पर देखते हैं[23] तो उन के चेहरों में चैन की ताज़गी

النَّعِيْمِ ﴿٢٤﴾ يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ ﴿٢٥﴾ خِتٰمُهٗ مِسْكٌ ؕ وَفِيْ ذٰلِكَ

पहचाने[24] निथरी (ख़ालिस व पाक) शराब पिलाए जाएंगे जो मोहर की हुई रखी है[25] उस की मोहर मुश्क पर है और इसी पर

9 : और रोज़े जज़ा या'नी क़ियामत के मुन्किर हैं। **10 :** हद से गुज़रने वाला। **11 :** उन की निस्बत कि येह **12 :** उस का कहना ग़लत है। **13 :** उन मआसी और गुनाहों ने जो वोह करते हैं या'नी अपने आ'माले बद की शामत से उन के दिल ज़ंग ख़ुर्दा और सियाह हो गए। हदीस शरीफ़ में है कि सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब बन्दा कोई गुनाह करता है उस के दिल में एक नुक़्ताए सियाह पैदा होता है, जब उस गुनाह से बाज़ आता है और तौबा व इस्तिग़फ़ार करता है तो दिल साफ़ हो जाता है और अगर फिर गुनाह करता है तो वोह नुक़्ता बढ़ता है यहां तक कि तमाम क़ल्ब सियाह हो जाता है। और येही रैन या'नी वोह ज़ंग है जिस का आयत में ज़िक्र हुवा। (ترمذی) **14 :** या'नी रोज़े क़ियामत **15 :** जैसा कि दुन्या में उस की तौहीद से महरूम रहे। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि मोमिनीन को आख़िरत में दीदारे इलाही की ने'मत मुयस्सर आएगी, क्यूं कि महरूमी दीदार से कुफ़्फ़ार की वईद में ज़िक्र की गई और जो चीज़ कुफ़्फ़ार के लिये वईद व तहदीद हो वोह मुसल्मान के हक़ में साबित हो नहीं सकती तो लाज़िम आया कि मोमिनीन के हक़ में येह महरूमी साबित न हो। हज़रते इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि जब उस ने अपने दुश्मनों को अपने दीदार से महरूम किया तो दोस्तों को अपनी तजल्ली से नवाज़ेगा और अपने दीदार से सरफ़राज़ फ़रमाएगा। **16 :** अज़ाब **17 :** दुन्या में **18 :** या'नी मोमिनीने सादिक़ीन के आ'माल नामे **19 :** इल्लिय्यीन सातवें आस्मान में ज़ेरे अर्श है। **20 :** या'नी उस की शान अजीब अज़मत वाली है। **21 :** इल्लिय्यीन में। उस में उन के आ'माल लिखे हैं। **22 :** फ़िरिश्ते **23 :** अल्लाह तआला के इक्राम और उस की ने'मतों को जो उस ने उन्हें अता फ़रमाई और अपने दुश्मनों को जो तरह तरह के अज़ाब में गिरिफ़्तार हैं। **24 :** कि वोह ख़ुशी से चमक्ते दमक्ते होंगे और सुरूरे क़ल्ब के आसार उन चेहरों पर नुमायां होंगे। **25 :** कि अबरार ही उस की मोहर तोड़ेंगे।

www.dawateislami.net

فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ ﴿۲۶﴾ وَ مِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ ﴿۲۷﴾ عَيْنًا يَّشْرَبُ

चाहिये कि ललचाएं ललचाने वाले[26] और उस की मिलौनी (मिलावट) तस्नीम से है[27] वोह चश्मा जिस से

بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿۲۸﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

मुक़र्रबाने बारगाह पीते हैं[28] बेशक मुजरिम लोग[29] ईमान वालों से[30]

يَضْحَكُوْنَ ﴿۲۹﴾ وَ اِذَا مَرُّوْا بِهِمْ يَتَغَامَزُوْنَ ﴿۳۰﴾ وَ اِذَا انْقَلَبُوْۤا اِلٰۤى

हंसा करते थे और जब वोह[31] इन पर गुज़रते तो येह आपस में उन पर आंखों से इशारे करते[32] और जब[33] अपने घर

اَهْلِهِمُ انْقَلَبُوْا فَكِهِيْنَ ﴿۳۱﴾ وَ اِذَا رَاَوْهُمْ قَالُوْۤا اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ

पलटते खुशियां करते पलटते[34] और जब मुसल्मानों को देखते कहते बेशक येह लोग

لَضَآلُّوْنَ ﴿۳۲﴾ وَ مَاۤ اُرْسِلُوْا عَلَيْهِمْ حٰفِظِيْنَ ﴿۳۳﴾ فَالْيَوْمَ الَّذِيْنَ

बहके हुए हैं[35] और येह[36] कुछ उन पर निगहबान बना कर न भेजे गए[37] तो आज[38] ईमान

اٰمَنُوْا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُوْنَ ﴿۳۴﴾ عَلَى الْاَرَآئِكِ ۙ يَنْظُرُوْنَ ﴿۳۵﴾ هَلْ

वाले काफ़िरों से हंसते हैं[39] तख़्तों पर बैठे देखते हैं[40] क्यूं

ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿۳۶﴾ ع ۳۶ ۸

कुछ बदला मिला काफ़िरों को अपने किये का[41]

26 : त़ाअ़ात की त़रफ़ सब्क़त कर के और बुराइयों से बाज़ रह कर। **27 :** जो जन्नत की शराबों में आ'ला है। **28 :** या'नी मुक़र्रबीन ख़ालिस शराबे तस्नीम पीते हैं और बाक़ी जन्नतियों की शराबों में शराबे तस्नीम मिलाई जाती है। **29 :** मिस्ल अबू जहल और वलीद बिन मुग़ीरा और आ़स बिन वाइल वग़ैरा रुअसाए कुफ़्फ़ार के **30 :** मिस्ल ह़ज़रते अ़म्मार व ख़ब्बाब व सुहैब व बिलाल वग़ैरा फ़ुक़राए मोमिनीन के। **31 :** मोमिनीन **32 :** ब त़रीक़े ता'न व ऐब के। **शाने नुज़ूल :** मन्क़ूल है कि ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ मुसल्मानों की एक जमाअ़त में तशरीफ़ ले जा रहे थे, मुनाफ़िक़ीन ने उन्हें देख कर आंखों से इशारे किये और मस्ख़रगी से हंसे और आपस में उन ह़ज़रात के ह़क़ में बेहूदा कलिमात कहे तो इस से पहले कि अ़लिय्ये मुर्तज़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم की ख़िदमत में पहुंचें येह आयतें नाज़िल हुईं। **33 :** कुफ़्फ़ार **34 :** या'नी मुसल्मानों को बुरा कह कर आपस में उन की हंसी बनाते और ख़ुश होते हुए। **35 :** कि सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم पर ईमान लाए और दुन्या की लज़्ज़तों को आख़िरत की उम्मीदों पर छोड़ दिया। **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : **36 :** कुफ़्फ़ार **37 :** कि उन के अह़वाल व आ'माल पर गिरिफ़्त करें, बल्कि उन्हें अपनी इस्लाह़ का हुक्म दिया गया है, वोह अपना हाल दुरुस्त करें दूसरों को बे वुक़ूफ़ बताने और उन की हंसी उड़ाने से क्या फ़ाएदा उठा सकते हैं। **38 :** या'नी रोज़े क़ियामत **39 :** जैसा काफ़िर दुन्या में मुसल्मानों की ग़ुर्बत व मेहनत पर हंसते थे, यहां मुआ़मला बर अ़क्स है : मोमिन दाइमी ऐशो राह़त में हैं और काफ़िर ज़िल्लतो ख़्वारी के दाइमी अ़ज़ाब में, जहन्नम का दरवाज़ा खोला जाता है, काफ़िर उस से निकलने के लिये दरवाज़े की त़रफ़ दौड़ते हैं, जब दरवाज़े के क़रीब पहुंचते हैं दरवाज़ा बन्द हो जाता है, बार बार ऐसा ही होता है। काफ़िरों की येह ह़ालत देख कर मुसल्मान उन से हंसी करते हैं और मुसल्मानों का ह़ाल येह है कि वोह जन्नत में जवाहिरात के **40 :** कुफ़्फ़ार की ज़िल्लतो रुस्वाई और शिद्दते अ़ज़ाब को और उस पर हंसते हैं। **41 :** या'नी उन आ'माल का जो उन्हों ने दुन्या में किये थे।

www.dawateislami.net